कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद
(Comte's Positivism)

कॉम्ट को प्रत्यक्षवाद का जन्मदाता कहा जाता है। आपकी अनेक अवधारणाएँ प्रत्यक्षवादी सिद्धान्त पर आधारित हैं, परन्तु उनके लेखों में इसका अधिक स्पष्टीकरण नहीं हुआ है। फिर भी इसे निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है–

कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद का अर्थ 'वैज्ञानिक' है। आपका विचार है कि समग्र ब्रह्मांड 'अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियमों' द्वारा व्यवस्थित तथा निर्देशित होता है और यदि इन नियमों को हमें समझना है तो धार्मिक या तात्त्विक आधारों पर नहीं अपितु विज्ञान की विधियों द्वारा ही समझा जा सकता है। वैज्ञानिक विधियों में कल्पना को कोई स्थान नहीं, ये तो निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य-प्रणाली होती है। इस प्रकार **निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण पर आधारित वैज्ञानिक विधियों के द्वारा सबकुछ समझना और उससे ज्ञान प्राप्त करना ही प्रत्यक्षवाद है।**

कॉम्ट का कथन है कि अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली द्वारा न केवल प्राकृतिक घटनाओं का ही अध्ययन सम्भव है बल्कि समाज का भी, क्योंकि समाज भी प्रकृति का एक अंग है। जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाएँ कुछ निश्चित नियमों पर आधारित होती हैं, उसी प्रकार प्रकृति के अंग के रूप में सामाजिक घटनाएँ भी कुछ निश्चित नियमों के अनुसार घटित होती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी की गति, ऋतु-परिवर्तन, चाँद और सूरज का आवागमन, दिन और रात का होना आदि प्राकृतिक घटनाएँ आकस्मिक नहीं हैं, बल्कि कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा निर्देशित होती हैं, उसी प्रकार मानवीय या सामाजिक घटनाएँ भी आकस्मिक नहीं होतीं; वे भी कुछ सामाजिक नियमों के अन्तर्गत आती हैं। अतः सामाजिक घटनाएँ किस प्रकार घटित होती हैं या उनका क्या क्रम व गति हो सकती है, इसका अध्ययन यथार्थ रूप से सम्भव है। यही प्रत्यक्षवाद का **प्रथम** आधारभूत सिद्धान्त है।

प्रत्यक्षवाद की **दूसरी** महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अपने को धार्मिक और तात्त्विक विचारों से दूर रखने का प्रयत्न करता है, क्योंकि इनकी अध्ययन-प्रणाली वैज्ञानिक कदापि नहीं हो सकती। प्रत्यक्षवाद कल्पना या ईश्वरीय महिमा के आधार पर नहीं, बल्कि निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली के आधार पर सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करता है। एक उदाहरण के द्वारा प्रत्यक्षवाद की इस विशेषता को सुन्दर ढंग से समझाते हुए **डॉ. ब्रिजेस** ने लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति संखिया खाकर मर जाता है तो इस घटना की व्याख्या धर्मवादी, तत्त्वज्ञानी और वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवादी तीनों ही अलग-अलग ढंग से करेंगे क्योंकि इन सबका दृष्टिकोण भी भिन्न- भिन्न है। धर्मवादी उस व्यक्ति के मर जाने को एक दैवीय विधान मानते हुए यह कहेंगे कि यही ईश्वर की इच्छा थी। इसके विपरीत एक तत्त्वज्ञानी यही कहेगा कि मिलन और विछोह एक स्वाभाविक नियम है और मृत्यु एक ऐसा अन्तिम विछोह है जिसमें बिछुड़कर फिर नहीं मिला जाता। परन्तु इसी मृत्यु के सम्बन्ध में एक वैज्ञानिक का मत और उसकी

Scanned with CamScanner

कार्य-प्रणाली उपर्युक्त दोनों मतों से बिल्कुल भिन्न होगी। यदि एक डॉक्टर से यह कहा जाए कि एक व्यक्ति संखिया खाकर मर गया है तो डॉक्टर मृत व्यक्ति का स्वयं जाकर वास्तविक निरीक्षण व परीक्षण करेगा और संखिया के तत्त्वों को विश्लेषित करता हुआ उस व्यक्ति पर संखिया के प्रभाव को देखेगा और तब कहीं उस मृत्यु के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट देगा। अतः स्पष्ट है कि वैज्ञानिक निरीक्षण, परीक्षण और वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली के आधार पर अपने अध्ययन-कार्य को करते हैं और उसी से किसी विषय के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करते हैं, यही **प्रत्यक्षवाद** है। अपने अध्ययन-कार्य में प्रत्यक्षवादी अनुभव और प्रयोग को उत्तरोत्तर कार्य में लाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्यक्षवाद किसी निपरेक्ष विचार को स्वीकार नहीं करता है क्योंकि सामाजिक जीवन में परिवर्तन उसी प्रकार स्वाभाविक है जिस प्रकार प्राकृतिक जगत में। **समाज या सामाजिक घटनाओं की यह गतिशीलता कुछ प्राकृतिक नियमों, न कि किसी प्रकार की 'इच्छा' द्वारा निर्देशित व संचालित होती है।**

जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, प्रत्यक्षवाद अपने क्षेत्र से धार्मिक और तात्त्विक विचारों का दृढ़तापूर्वक बहिष्कार करता है। ऐसा वह इस कारण करता है क्योंकि इस तरह के विचार एक प्रकार की 'सट्टेबाजी' हैं। दूसरे शब्दों में, **कॉम्ट** का विश्वास है कि धार्मिक व तात्त्विक 'अटकलपच्चू' चिन्तन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सत्य भी हो सकता है और काल्पनिक भी, अर्थात् ऐसे निष्कर्षों का सत्य या काल्पनिक होना 'संयोग' या अनुमान की बात है और उनके सत्यासत्य का निर्णय अगर सम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही है। कुछ भी हो, वैज्ञानिक चिन्तन 'संयोग' या 'अनुमान' पर कदापि निर्भर नहीं हो सकता और न होना ही चाहिए। चूँकि प्रत्यक्षवाद एक वैज्ञानिक विचार-प्रणाली है। इस कारण इसे यथार्थ होना चाहिए और यथार्थता के क्षेत्र में 'सट्टेबाजी' या अनुमान का कोई स्थान हो ही नहीं सकता।

अतः स्पष्ट है कि प्रत्यक्षवादी प्रणाली के आधार पर किए गए अध्ययन और उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैज्ञानिक तथा विश्वसनीय होते हैं। **कॉम्ट** का कथन है कि यही कारण है कि धार्मिक तथा तात्त्विक विचारधारा को वैज्ञानिक लोग अधिक महत्त्व नहीं देते हैं। उनका क्षेत्र अब केवल मात्र सामाजिक अध्ययन तक ही सीमित रह गया है। परन्तु यदि हम सामाजिक अध्ययन को वैज्ञानिक स्तर पर लाना चाहते हैं तो इस सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में भी तात्त्विक तथा धार्मिक विचारधारा को निकाल देना ही उचित होगा। ऐसा किए बिना समाजशास्त्र विज्ञान नहीं हो सकता।

कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवादी प्रणाली के अन्तर्गत सर्वप्रथम हम–

(अ) अध्ययन-विषय को चुनते हैं और फिर

(ब) अवलोकन या निरीक्षण द्वारा उस विषय से सम्बन्धित प्रत्यक्ष होने वाले समस्त तथ्यों (facts) को एकत्रित करते हैं और

(स) इसके बाद इन तथ्यों का विश्लेषण करके सामान्य विशेषताओं के आधार पर इनका वर्गीकरण करते हैं और अन्त में

Scanned with CamScanner

(द) उसी विषय से सम्बन्धित कोई निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार निरीक्षण, परीक्षण और वर्गीकरण प्रत्यक्षवाद की नींव हैं।

कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद या विज्ञान उपस्थित घटनाओं व तथ्यों के बाहर न कुछ देखता है और न पहचानता है अर्थात् जिन घटनाओं और तथ्यों को हम प्रत्यक्ष रूप से देख या निरीक्षण कर सकते हैं, प्रत्यक्षवाद का क्षेत्र वहीं तक सीमित है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जो कुछ भी अज्ञेय या अज्ञात है उसको जानने या खोज निकालने का प्रयत्न प्रत्यक्षवाद के अन्तर्गत नहीं आता है। इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि प्रत्यक्षवाद अज्ञात और अज्ञेय के पीछे बिना किसी वास्तविक आधार के दौड़ता नहीं है क्योंकि इस प्रकार काल्पनिक दौड़ दौड़ना किसी भी विज्ञान को शोभा नहीं देता, न ही किसी प्रकार का 'ख्याली पुलाव' पकाकर वह अपने वैज्ञानिक स्तर पर स्थिर रह सकता है। इसलिए प्रत्यक्षवाद घटनाओं के बाहर या पार जाने का प्रयत्न नहीं करता है क्योंकि केवल घटनाओं को ही जाना जा सकता है। प्रत्यक्षवादी एक समय में केवल उसी सीमा तक देखना या केवल उन घटनाओं का ही अध्ययन करता है जहाँ तक कि उस घटना से सम्बन्धित तथ्यों का वास्तविक निरीक्षण और परीक्षण सम्भव हो; और जब उस सीमा तक समस्त विषय या घटनाएँ स्पष्ट हो जाती हैं तो उससे आगे और कुछ प्रयत्न करने का प्रयत्न किया जाता है ताकि किसी भी स्तर पर काल्पनिक चिन्तन का सहारा लेने का अवसर प्राप्त न हो। **डॉ. ब्रिजेस** ने इस सम्बन्ध में **कॉम्ट** के दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है कि "**कॉम्ट** घटनाओं की दुनिया के उस पार अवस्थित गूढ़ रहस्य के सम्बन्ध में अत्यधिक सचेत थे। इसे आप प्रत्येक पग पर उसी तरह अनुभव करते रहे जिस प्रकार एक नाविक उस अथाह समुद्र के विषय में सचेत रहता है जिसके कि बीच से होकर उसे अपना मार्ग निश्चित करना पड़ता है। लेकिन चूँकि उस रहस्य को भेद करना मनुष्य का काम नहीं, इसलिए उसे अपनी क्रियाओं को उस क्षेत्र की ओर मोड़ना होगा जहाँ कि उसका फल उसे मिल सके।"

प्रत्यक्षवाद की मान्यताएँ या विशेषताएँ
(Assumptions or Characteristics of Positivism)

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर मोटे तौर पर **कॉम्ट के प्रत्यक्षवाद की प्रमुख विशेषताओं** को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है–

1. कुछ निश्चित सामाजिक नियम–प्रत्यक्षवाद की प्रथम मान्यता यह है कि जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाएँ आकस्मिक नहीं होतीं बल्कि निश्चित नियमों के अनुसार घटित होती हैं, उसी प्रकार सामाजिक घटनाएँ भी अनायास घटित नहीं होतीं। समाज भी प्रकृति का एक अंग है। अतः सामाजिक घटनाएँ भी कुछ निश्चित नियमों के आधार पर घटित होती हैं और वास्तविक निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग के द्वारा इन नियमों को खोजा जा सकता है। इस रूप में प्रत्यक्षवाद इस मान्यता पर आधारित है कि समाज कुछ निश्चित सामाजिक नियमों द्वारा संचालित व नियन्त्रित होता है और इसीलिए घटनाओं का अध्ययन

वैज्ञानिक तरीके से सम्भव है।

2. यथार्थ ज्ञान–प्रत्यक्षवाद की दूसरी विशेषता यह है कि यह अपने को धार्मिक व दार्शनिक विचारों से दूर रखता है और अपने को वैज्ञानिक अध्ययन प्रणाली के माध्यम से वास्तविक ज्ञान से सम्बन्धित मानता है। **कॉम्ट** के प्रत्यक्षवाद में अनुमान, संयोग या सट्टेबाजी का कोई स्थान नहीं है। वह किसी भी निरपेक्ष विचार को स्वीकार नहीं करता क्योंकि सामाजिक जीवन में परिवर्तन स्वाभाविक है। इस अर्थ में प्रत्यक्षवाद दूसरे के मुँह मीठा नहीं खाता बल्कि वास्तविक निरीक्षण, परीक्षण व प्रयोग द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्ति पर बल देता है।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण–प्रत्यक्षवाद का कोई सम्बन्ध काल्पनिक उड़ान से नहीं है। उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है और वह स्वयं 'विज्ञान' है। **डॉ. ब्रिजेस** ने लिखा है कि ईश्वरीय इच्छा या दैवीय विधान पर प्रत्यक्षवाद की कोई आस्था नहीं है। वह तो स्वयं निरीक्षण, परीक्षण व प्रयोग को आधार मानकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपना अध्ययन-कार्य पूरा करता है।

4. वैज्ञानिक कार्य-प्रणाली–प्रत्यक्षवाद वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक कार्य-प्रणाली से भी सम्बन्धित होता है। इसका सरल अर्थ यह है कि प्रत्यक्षवाद के अन्तर्गत घटनाओं का अध्ययन मनमाने ढंग से नहीं किया जाता। इसके लिए सुनिश्चित वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया जाता है। इस वैज्ञानिक कार्यप्रणाली के अन्तर्गत सर्वप्रथम अध्ययन के लिए एक विषय को चुना जाता है, फिर उस विषय से सम्बन्धित तथ्यों को वास्तविक निरीक्षण के आधार पर एकत्रित किया जाता है, इस प्रकार संकलित तथ्यों का पुनः परीक्षण किया जाता है, फिर उनका वर्गीकरण किया जाता है और तब अन्त में अध्ययन विषय से सम्बन्धित कोई निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार प्रत्यक्षवाद निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की वैज्ञानिक कार्यप्रणाली से सम्बन्धित होता है।

5. प्रत्यक्ष न होने वाली घटनाओं से असम्बद्ध–प्रत्यक्षवाद का ऐसी किसी घटना से कोई सम्बन्ध नहीं होता जिसे हम प्रत्यक्ष रूप में देख या निरीक्षण नहीं कर सकते। प्रत्यक्षवाद या प्रत्यक्ष-योग्य वास्तविक रूप में निरीक्षण-योग्य घटनाओं तक ही सीमित होता है। प्रत्यक्षवाद अज्ञात और अप्रत्यक्ष के पीछे बिना किसी वास्तविक आधार के दौड़ता नहीं है क्योंकि इस प्रकार की काल्पनिक दौड़ दौड़ना किसी भी विज्ञान को शोभा नहीं देता और न ही किसी प्रकार का 'ख्याली पुलाव' पकाकर वह अपने वैज्ञानिक स्तर पर स्थिर रह सकता है।

6. धर्म और विज्ञान का समन्वय–कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद केवल 'विज्ञान' ही नहीं 'धर्म' भी है–मानवता का धर्म। यह प्रत्यक्षवाद पदार्थ भावना से प्रेरित मानवता के धर्म के आदर्शों पर आधारित एक नवीन समाज व्यवस्था की स्थापना को अपना प्रमुख उद्देश्य मानता है। प्रत्यक्षवाद से वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है, वास्तविक ज्ञान समाज में बौद्धिक व नैतिक एकता को पनपाने में सहायक होता है और इस प्रकार की एकता से मानव कल्याण सहज हो सकता है। इसी रूप में प्रत्यक्षवाद मानवता का 'धर्म' है

Scanned with CamScanner

क्योंकि धर्म का भी अन्तिम व परम उद्‌देश्य मानव-कल्याण ही है। इस प्रकार **कॉम्ट** के प्रत्यक्षवाद में विज्ञान और धर्म का संघर्ष नहीं, अपितु उनका समन्वय निहित है।

7. सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन—कॉम्ट का प्रत्यक्षवाद उपयोगितावादी विज्ञान है और उस रूप में यह विश्वास करता है कि प्रत्यक्षवाद के माध्यम से प्राप्त यथार्थ ज्ञान को सामाजिक पुनर्निर्माण के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। प्रत्यक्षवादी समाज में भय, असुरक्षा और स्वार्थ जैसी कोई चीज न होगी, अपितु प्रेम, सद्‌भावना व सहयोग का राज्य होगा। समाज के इस पुनर्गठन में प्रत्यक्षवाद समस्त हिंसात्मक प्रणालियों से दूर रहने का आग्रह करता है।

चेम्बलिस ने प्रत्यक्षवाद की उपर्युक्त **प्रमुख विशेषताओं** का वर्णन अति उत्तम ढंग से इस प्रकार किया है—"**कॉम्ट** ने यह अस्वीकार किया था कि प्रत्यक्षवाद अनीश्वरवादी है, क्योंकि यह किसी भी रूप में अलौकिकता से सम्बन्धित नहीं है।" उनका यह भी दावा था कि प्रत्यक्षवाद भाग्यवादी नहीं है, क्योंकि वह यह स्वीकार करता है कि बाहरी अवस्था में परिवर्तन हो सकता है; यह आशावादी भी नहीं है क्योंकि इसमें आशावाद के आध्यात्मिक आधार का अभाव है; यह भौतिकवादी भी नहीं है क्योंकि यह भौतिक शक्तियों को बौद्धिक शक्ति के अधीन करता है। प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध 'वास्तविकता' से है, काल्पनिक से नहीं; 'उपयोगी' ज्ञान से है, न कि समस्त ज्ञान से; इसका सम्बन्ध उन 'निश्चित' तथ्यों से है जिनका कि पूर्व-ज्ञान सम्भव है। इसका सम्बन्ध 'यथार्थ' ज्ञान से है, न कि अस्पष्ट विचारों से; 'सावयवी' सत्य से है, न कि शाश्वत सत्य से, 'सापेक्ष' से है न कि निरपेक्ष से। अन्त में, प्रत्यक्षवाद इस अर्थ में 'सहानुभूतिपूर्ण' है कि यह उन सब लोगों को एक सखापन में सम्बद्ध करता है जोकि इसके मूल-सिद्धान्त और अध्ययन-प्रणालियों पर विश्वास करते हैं। संक्षेप में, प्रत्यक्षवाद (विज्ञान) विचार की वह पद्धति है जोकि सार्वभौमिक रूप से सभी को मान्य हो।

उपर्युक्त विवचेना से स्पष्ट है कि प्रत्यक्षवाद का प्रथम और सर्वप्रमुख उद्‌देश्य धार्मिक तथा तात्त्विक अवधारणाओं या विचारों से मानव-मस्तिष्क को मुक्त करके सामाजिक अध्ययन व अनुसन्धान को वैज्ञानिक स्तर पर लाना है। प्रत्यक्षवाद प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धति को सामाजिक अध्ययन में प्रयोग में लाकर सामाजिक विज्ञान को भी उतना ही यथार्थ बनाना चाहता है जितना कि भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र आदि हैं। इस प्रकार प्रत्यक्षवाद वह वैज्ञानिक साधन बन जाता है जिसके द्वारा मानव का बौद्धिक विकास सम्भव और सरल होगा। बौद्धिक विकास के बिना सामाजिक प्रगति भी असम्भव है; अतः प्रत्यक्षवाद सामाजिक प्रगति में भी सहायक होगा क्योंकि सामाजिक तथ्यों के निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली के द्वारा हमें जो वास्तविक या प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होगा उसके व्यावहारिक प्रयोग द्वारा सामाजिक प्रगति को सम्भव बनाया जा सकेगा। वास्तविक या प्रत्यक्ष ज्ञान सामाजिक पुनर्संगठन की भी ठोस बुनियाद होगी। प्रत्यक्षवाद का अन्तिम उद्‌देश्य सामाजिक पुनर्निर्माण या पुनर्संगठन ही है।

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्षवाद एक धर्म के रूप में (Positivism as a Religion)

यदि **कॉम्ट** अपने प्रत्यक्षवाद के उपर्युक्त स्वरूप को अपनी विचारधारा में स्थायी बना लेते तो शायद उनका स्थान आधुनिक युग के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक विचारकों में एक होता और उन्हें **जॉन स्टुअर्ट मिल** जैसे विद्वान् के सहारे को भी न खोना पड़ता। **मिल** तथा अन्य कुछ विद्वानों का मत है कि *Positive Philosophy* में **कॉम्ट** ने सामाजिक विज्ञान के लिए जिस वैज्ञानिक स्तर को निर्धारित किया था उस पर वे स्वयं ही स्थिर न रह पाए। इसीलिए **कॉम्ट** के लिए कहा जाता है कि "प्रत्यक्षवाद के जन्मदाता स्वयं ही सबसे कम प्रत्यक्षवादी थे।" इसका एक प्रमुख कारण उनके अपने ही द्वारा निर्धारित प्रत्यक्षवाद के एक उद्‌देश्य में निहित है। **कॉम्ट** अपने को केवल मात्र एक वैज्ञानिक के रूप में ही प्रस्तुत करना नहीं चाहते थे, अपितु उनका उद्‌देश्य बौद्धिक तथा नैतिक 'एकता' के आधार पर समाज का संगठन करना भी था। यह एकता 'ज्ञान' के बिना सम्भव नहीं। इस कारण समाज का संगठन 'ज्ञान' के सुदृढ़ आधार पर होगा और 'ज्ञान' की प्राप्ति प्रत्यक्षवादी सिद्धान्तों के आधार पर ही सम्भव है। प्रत्यक्षवादी कार्य-प्रणाली से जिस ज्ञान की प्राप्ति होगी वह ज्ञान वास्तविक ज्ञान होगा और उसी ज्ञान के आधार पर सम्पूर्ण मानवता एक सूत्र में बँध जाएगी। अतः प्रत्यक्षवाद केवल एक विज्ञान ही नहीं अपितु मानवता 'के लिए' एक धर्म भी है। इसे और भी स्पष्ट रूप में इस प्रकार समझाया जा सकता है कि 'धर्म' का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य या उद्‌देश्य जनता के सम्मुख कुछ नैतिक नियमों को प्रस्तुत करना है जिसके आधार पर समाज के सदस्य एक सूत्र में बँध जाएँ और समाज में नैतिक एकता पनप सके। यह एकता या नैतिक विकास तब तक सम्भव नहीं, जब तक जनता का बौद्धिक स्तर या 'ज्ञान' का स्तर ऊँचा न हो और ज्ञान की वृद्धि प्रत्यक्षवाद के आधार पर ही सम्भव है। इस प्रकार प्रत्यक्षवाद लोगों में ज्ञान की वृद्धि और उसके आधार पर नैतिक एकता पनपाने में सहायक होता है। इस दृष्टिकोण से प्रत्यक्षवाद मानव-कल्याण का एक आधारभूत कारक है और सच्चे अर्थ में 'धर्म' का भी सार्थकतम उद्‌देश्य मानव-कल्याण ही है। इसीलिए प्रत्यक्षवाद मानवता का एक ऐसा सच्चा धर्म है जोकि अपना सम्बन्ध अलौकिक शक्ति से उतना नहीं जोड़ता जितना कि बौद्धिक तथा नैतिक एकता के आधार पर सामजिक संगठन और प्रगति से। इस आधार पर प्रत्यक्षवाद की व्याख्या करते हुए **कॉम्ट** ने लिखा है कि प्रत्यक्षवाद वह वैज्ञानिक मत है जिसका कि उद्‌देश्य समस्त मानव-समाजों का, विशेषकर यूरोप के समाजों या राष्ट्रों का, भौतिक, बौद्धिक तथा नैतिक कल्याण करना है। इस उद्‌देश्य की प्राप्ति विशेष प्रकार के निर्देश तथा शिक्षा के द्वारा होगी। इस प्रत्यक्षवाद के तीन विभाजन हैं—

1. विज्ञानों का दर्शन (Philosophy of the Sciences)—इसका सारतत्त्व यह है कि अपने भाग्य या स्थिति के सुधार या उन्नति के लिए मनुष्य को अपने परिश्रम या प्रयत्नों पर भरोसा करना चाहिए। इस दर्शन के अन्तर्गत निम्न विज्ञानों का समावेश है—गणितशास्त्र, नक्षत्र विद्या, पदार्थ विज्ञान, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र, समाजशास्त्र और

Scanned with CamScanner

नीतिशास्त्र।

2. वैज्ञानिक धर्म और नीतिशास्त्र (Scientific Religion and Ethics)—प्रत्यक्ष धर्म का कोई सम्बन्ध किसी भी अलौकिक शक्ति से नहीं है; यह तो समस्त 'मानव का धर्म' है। प्रत्यक्षवाद के नैतिक नियम, संक्षेप में, इस प्रकार हैं—दूसरों की सेवार्थ अधिक से अधिक उपयुक्त होने के लिए शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक उन्नति।

3. प्रत्यक्ष राजनीति (Positive Politics)—इस प्रकार की राजनीति का उद्देश्य है युद्ध को दबाना व यूरोपियन राज्यों को मिलाकर मित्रराष्ट्र की स्थापना करना।

समाज को उक्त आदर्शों के अनुसार बदलने के लिए प्रत्यक्षवाद समस्त हिंसात्मक प्रणालियों का बहिष्कार करता है। प्रेम इसका सिद्धान्त है, सुव्यवस्था इसका आधार और प्रगति इसका ध्येय है। नैतिक दृष्टि से इसका नियम है—दूसरों के लिए जीवित रहो!

इस प्रकार **कॉम्ट** के प्रत्यक्षवादी विचार में उन्होंने उसके धार्मिक या नैतिक पक्ष को वैज्ञानिक पक्ष से अधिक महत्ता प्रदान की। उनकी विचारधारा के इस परिवर्तन को उनके (**कॉम्ट** के) अनुयायियों ने उनके 'पतन' के रूप में देखा। यहाँ तक कि **मिल** ने लिखा है कि **कॉम्ट** के इस दयनीय पतन पर मुझे रोना आता है। परन्तु **कॉम्ट** का यह दावा था कि उनका प्रत्यक्षवाद धर्म और विज्ञान दोनों ही है और मानव-प्रगति के लिए इन्हें पृथक् करना उचित न होगा, बल्कि मानव-प्रगति धर्म और विज्ञान के सामंजस्य से ही सम्भव होगी।

विज्ञानों का संस्तरण
(Hierarchy of Sciences)

अथवा

ज्ञान या विज्ञानों का वर्गीकरण
(Classification of Knowledge or Sciences)

विज्ञानों के संस्तरण या वर्गीकरण की पृष्ठभूमि
(Background of the Hierarchy of Classification of Sciences)

अपने नवीन समाज-विज्ञान 'समाजशास्त्र' की नींव रखते हुए **कॉम्ट** ने मानवीय चिन्तन के तीन स्तरों—आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं प्रत्यक्षवादी स्तरों—का उल्लेख किया है और साथ ही अपने इस समाज-विज्ञान के लिए एक वैज्ञानिक कार्य प्रणाली अर्थात् 'प्रत्यक्षवाद' को भी प्रस्तुत किया। परन्तु इतना-भर करके वे सन्तुष्ट नहीं थे। एक सच्चे 'पिता' के रूप में वे अपने 'मानस-पुत्र' समाजशास्त्र को विज्ञान की दुनिया में सुप्रतिष्ठित भी देखना चाहते थे। समाजशास्त्र के लिए इस वैज्ञानिक स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए ही **कॉम्ट** ने 'तीन स्तरों का नियम' व 'प्रत्यक्षवाद' के बाद तीसरा आधार विज्ञानों के संस्तरण या वर्गीकरण के रूप में तैयार किया। **प्रोफेसर बोगार्डस** ने भी लिखा है कि, "**कॉम्ट** की योजना का तीसरा चरण विज्ञानों का वर्गीकरण था, जिसके अन्तर्गत समाजशास्त्र को नवीनतम पर सर्वश्रेष्ठ विज्ञान के रूप में दर्शाया गया।"

Scanned with CamScanner

इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि ग्रीक विचारकों ने भी समस्त विज्ञानों का वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया था और वे थे—भौतिकशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा राजनीति-शास्त्र। प्रख्यात दार्शनिक बेकन ने भी मानसिक शक्तियों के तीन पक्षों—स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति तथा तर्कशक्ति से सम्बन्धित तीन अध्ययन-शास्त्रों का उल्लेख किया है और वे हैं—इतिहास, कवित्व तथा विज्ञान।

विज्ञानों के वर्गीकरण का विचार **कॉम्ट** को **सेंट साइमन** से मिला था। यद्यपि आप **सेंट साइमन** के इस विज्ञान से तो सहमत थे कि विज्ञानों का वर्गीकरण वैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए, फिर भी **सेंट साइमन** के वर्गीकरण से आप सहमत न थे। उनका दावा था कि आप **सेंट साइमन** से कहीं अधिक वैज्ञानिक आधारों पर विज्ञानों का वर्गीकरण या संस्तरण प्रस्तुत कर सकते हैं। इन आधारों का उल्लेख उन्होंने अपनी कृति ***'Positive Philosophy'*** में किया है। **कॉम्ट** का इस पुस्तक को लिखने का एक उद्‌देश्य अपने नवीन विज्ञान 'समाजशास्त्र' के लिए एक सुदृढ़ व वैज्ञानिक नींव को ढूँढ़ना था जिससे कि समाजशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र और इसका अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्ध स्पष्ट हो जाए।

संस्तरण के दो आधार या सिद्धान्त
(Two Basis or Principles of Hierarchy)

उपर्युक्त उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए **कॉम्ट** ने विज्ञानों का एक नवीन वर्गीकरण या संस्तरण उतार-चढ़ाव के आधार पर प्रस्तुत किया और इसके लिए उन्होंने दो आधारों या सिद्धान्तों को निश्चित किया। वे हैं—

1. पराश्रयता वृद्धि का सिद्धान्त एवं
2. घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता का सिद्धान्त।

अब हम इन्हीं दो सिद्धान्तों या आधारों के विषय में विवेचना करेंगे—

1. पराश्रयता वृद्धि-क्रम का सिद्धान्त (The Principle of the order of increasing dependence)—विज्ञानों के वर्गीकरण या संस्तरण को प्रस्तुत करने के लिए **कॉम्ट** ने **पराश्रयता वृद्धि क्रम के सिद्धान्त को चुना**। दूसरे शब्दों में, **कॉम्ट** के विचारानुसार ज्ञान या विज्ञान की प्रत्येक शाखा अपने से पहली शाखा या विज्ञान के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आश्रित होती है। इन निर्भरता का परिणाम यह होता है कि ज्ञान या विज्ञान की एक शाखा से दूसरी शाखा को जैसे-जैसे हम आगे बढ़ाते जाते हैं वैसे-वैसे उस शाखा की निर्भरता में वृद्धि होती जाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार जो सर्वप्रथम विज्ञान है वह किसी पर निर्भर नहीं; इसके बाद जो दूसरा विज्ञान विकसित होगा वह प्रथम विज्ञान पर आश्रित या निर्भर होगा; जो तीसरा विज्ञान होगा वह पहले और दूसरे विज्ञान पर आश्रित होगा; जो चौथा विज्ञान होगा वह पहले, दूसरे और तीसरे विज्ञान पर निर्भर होगा और इसी क्रम से विज्ञान की प्रत्येक शाखा की निर्भरता में वृद्धि होती जाएगी। इसलिए **कॉम्ट** के विज्ञानों के वर्गीकरण के सिद्धान्त को 'निर्भरता वृद्धि-क्रम का सिद्धान्त'

Scanned with CamScanner

कहा गया है। आगे की विवेचना से यह सिद्धान्त और भी स्पष्ट हो जाएगा।

2. **घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता का सिद्धान्त** (The Principle of decreasing Generality and incerasing Complexity)—**कॉम्ट** के अनुसार विज्ञानों का विकास एक विशेष क्रम से होता है और वह क्रम है **'घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता'**। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे नवीन विज्ञान का जन्म होता है वैसे-वैसे उस विज्ञान की अध्ययन-वस्तु क्रमशः कम सामान्य और अधिक जटिल होती जाती है। **कॉम्ट** के विज्ञानों के वर्गीकरण के सिद्धान्त के अनुसार, एक विज्ञान की अध्ययन-वस्तु जिस प्रकार की होती है, उसी के अनुसार, उस विज्ञान की अन्य विज्ञानों पर निर्भरता तथा विज्ञानों के संस्तरण में उसका स्थान निश्चित होता है। अध्ययन-वस्तु जितनी ही विशिष्ट तथा जटिल होगी उस विज्ञान की अपने से पहले वाले विज्ञान या विज्ञानों पर निर्भरता या पराश्रयता उतनी बढ़ती जाएगी। यह इसलिए होता है क्योंकि सरल और सामान्य घटनाएँ पहले आती हैं और उनका अध्ययन करना भी सरल है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पहला विज्ञान वह है जो सबसे सरल विषय या घटनाओं का अध्ययन करता है और जो घटना सबसे अधिक सरल है वह सबसे अधिक सामान्य भी होती है—सामान्य इस अर्थ में है कि वह सब स्थानों पर विद्यमान है। इस प्रकार सबसे प्रथम विज्ञान सबसे अधिक सामान्य और सबसे कम जटिल घटनाओं या विषयों से सम्बन्धित होता है। इस प्रथम विज्ञान के बाद जिन अन्य विज्ञानों का विकास हुआ उनका अध्ययन-विषय क्रमशः कम सामान्य और अधिक जटिल होता गया। इस प्रकार दूसरा विज्ञान प्रथम विज्ञान से अधिक जटिल विषय-वस्तु से सम्बन्धित होता है और तीसरा विज्ञान दूसरे विज्ञान से कम सामान्य और अधिक जटिल विषय से सम्बन्धित होता है। यही क्रम चलता रहता है। विज्ञानों के विकास के इस क्रम में चूँकि प्रत्येक विज्ञान का अध्ययन-विषय क्रमशः जटिल होता जाता है, इस कारण प्रत्येक विज्ञान अपने से पहले विज्ञान या विज्ञानों की खोजों, निष्कर्षों और सिद्धान्तों पर क्रमशः अधिक निर्भर होता जाता है अर्थात् उसकी पराश्रयता में क्रमशः वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार प्रत्येक विज्ञान अपने से पहले के विज्ञान या विज्ञानों पर आधारित रहते हुए अगले विज्ञान के लिए आधार प्रस्तुत करता है। साथ ही **कॉम्ट** के मतानुसार प्रत्येक विज्ञान अपने पिछले विज्ञान या विज्ञानों पर केवल निर्भर ही नहीं रहा है, बल्कि वह पिछले विज्ञान या विज्ञानों को अपनी खोजों से सींचता भी रहता है।

Scanned with CamScanner